गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २३

मन के विषय पर महानतम ग्रन्थों में से एक है 'योगवासिष्ठ।' इसमें मुनि वसिष्ठ कहते हैं :

यदिदं भासते किंचित्तत्तस्येव निरामयम्।
कचनं काचकस्यैव कान्तस्याऽतिमणेरिव॥

जो कुछ भी ज्योतिर्मय है, वह उस परमात्मा का शुद्ध प्रकाश है।
उसका प्रकाश एक अलौकिक मणि की भाँति हमें घेरे रहता है। [३.२१:६८]

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग* अध्याय २ "अस्तित्व की शुद्धि," से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. २८।